वर्ष-17 अंक-105 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रुपए कानपुर, मंगलवार 18 अप्रैल 2023

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी, ऐटा, हरदोई, उन्नाव, कानपुर देहात में प्रसारित

दैनिक
नगर छाया
आप की आवाज़.....

RNI N.UPHIN/2007/27090

बैंगन फसल में कीट नियंत्रण हेतु वितरित की दवा

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ बिजेंद्र सिंह के निर्देश के क्रम में आज कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के प्रभारी डॉ अजय कुमार सिंह ने किसानों को बैंगन फसल में लगने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु दवा का वितरण किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि बैंगन की फसल को तना और फल छेदक कीट सबसे अधिक नुकसान पहुंचाता है। इस कीट के प्रकोप से उपज ही कम नहीं होती ग्रसित फलों की गुणवत्ता कम होने से कृषकों को फसल का कम मूल्य मिलता है।

किसी भी कीट के प्रभावी नियंत्रण के लिए आवश्यक है कि हम उस कीट की प्रकृति, स्वभाव, पहिचान, जीवन चक्र के बारे में जानकारी रखें, तभी कीट का प्रभावकारी नियंत्रण किया जा सकता है।

तना एवं फल छेदक कीट के वयस्क मध्यम आकार के मौथ / पतंगें जिनके अग्र पंख सफेद धब्बेदार होते हैं।

बैंगन फसल को इस कीट की इल्लियां / लार्वा नुकसान पहुंचाते हैं। फरवरी मार्च में कीट की वयस्क मादायें दूधिया रंग के अंडे एक एक करके या समूह में पत्तियों की निचली सतह, तनों, फूलों की कलियां या फल के आधार पर देती है। 3-5 दिनों बाद अंडों से लार्वा निकलने के बाद तने व शाखाओं के अग्र भाग में घुस जाती है जिस कारण तने / शाखाओं के अग्र भाग मुरझा कर लटक जाते है व बाद में सूख जाते है। पौधों पर फल आने पर लार्वा /इल्लियां फलों में छेद बना कर अंदर प्रवेश कर अन्दर घुसते ही कीट छेदों को अपने मल मूत्र से बन्द कर देते हैं।

इल्लियां अंदर ही अंदर फल के गूदे को खाती रहती हैं। कीट द्वारा किए गए छिद्रों से फफूंद व जीवाणु फलों के अन्दर प्रवेश करते हैं जिससे बाद में फल सड़ने लगते हैं।

पूरी तरह विकसित लार्वा सुदृढ़,गुलाबी रंग और भूरे सिर वाला होता है जो तनों,सूखी टहनियों या जमीन पर गिरी पत्तियों पर प्यूपा बनता है।

कीट की लार्वा अवस्था 12-15 दिनों की होती है। प्यूपा अवस्था 6-10 दिनों की होती है जिसके बाद वयस्क बनते हैं। वयस्क पतंगा 2-5 दिन जीवित रहता है। मौसम के अनुसार एक जीवन चक्र 21-43 दिनों में पूरा करता है। एक बर्ष के सक्रिय समय में इसकी पांच पीढ़ियां तक हो सकती है। कृषि विज्ञान केंद्र कानपुर देहात द्वारा उक्त कीट के नियंत्रण हेतु प्रक्षेत्र परीक्षण अंतर्गत कृषक पद्धति क्लोरोपाइरीफास या इंडोकसाकार्ब या मैलाथियान एक चम्मच दवा का तीन लिटर पानी में घोल बनाकर पांच दिनों के अन्तराल पर तीन छिड़काव के सापेक्ष किसान भाई छिड़काव कर दें जिससे फसल को कीड़ों से बचाया जा सकता है।

WORLD खबर EXPRESS

WORLD खबर एक्सप्रेस

सोमवार 17 अप्रैल, 2023 | अंक - 352

www.worldkhabarexpress.media
www.worldkhabarexpress.com

www.twitter.com/worldkhabarexpress www.facebook.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress MID DAY

बैंगन की फसल में कीट नियंत्रण हेतु वितरित की दवा

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ बिजेंद्र सिंह के निर्देश के क्रम में आज कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के प्रभारी डॉ अजय कुमार सिंह ने किसानों को बैंगन फसल में लगने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु दवा का वितरण किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि बैंगन की फसल को तना और फल छेदक कीट (Leucinodes orbonalis) सबसे अधिक नुकसान पहुंचाता है। इस कीट के प्रकोप से उपज ही कम नहीं होती ग्रसित फलों की गुणवत्ता कम होने से कृषकों को फसल का कम मूल्य मिलता है।

किसी भी कीट के प्रभावी नियंत्रण के लिए आवश्यक है कि हम उस कीट की प्रकृति, स्वभाव, पहिचान, जीवन चक्र के बारे में जानकारी रखें, तभी कीट का प्रभावकारी नियंत्रण किया जा सकता है। तना एवं फल छेदक कीट के वयस्क मध्यम आकार के मौथ/पतंगें जिनके अग्र पंख सफेद धब्बेदार होते हैं।

बैंगन फसल को इस कीट की इल्लियां / लार्वा नुकसान पहुंचाते हैं। फरवरी मार्च में कीट की वयस्क मादायें दूधिया रंग के अंडे एक एक करके या समूह में पत्तियों की निचली सतह, तनों, फूलों की कलियां या फल के आधार पर देती है। 3-5 दिनों बाद अंडों से लार्वा निकलने के बाद तने व शाखाओं के अग्र भाग में घुस जाती है जिस कारण तने/शाखाओं के अग्र भाग मुरझा कर लटक जाते है व बाद में सूख जाते है। पौधों पर फल आने पर लार्वा/इल्लियां फलों में छेद बना कर अंदर प्रवेश कर अन्दर घुसते ही कीट छेदों को अपने मल मूत्र से बन्द कर देते हैं। इल्लियां अंदर ही अंदर फल के गूद्दे को खाती रहती हैं। कीट द्वारा किए गए छिद्रों से फफूंद व जीवाणु फलों के अन्दर प्रवेश करते हैं जिससे बाद में फल सड़ने लगते हैं। पूरी तरह विकसित लार्वा सुदृढ़, गुलाबी रंग और भूरे सिर वाला होता है जो तनों, सूखी टहनियों या जमीन पर गिरी पत्तियों पर प्यूपा बनता है। कीट की लार्वा अवस्था 12-15 दिनों की होती है। प्यूपा अवस्था 6-10 दिनों की होती है जिसके बाद वयस्क बनते हैं। वयस्क पतंगा 2-5 दिन जीवित रहता है। मौसम के अनुसार एक जीवन चक्र 21-43 दिनों में पूरा करता है। एक बर्ष के सक्रिय समय में इसकी पांच पीढ़ियां तक हो सकती है। कृषि विज्ञान केंद्र कानपुर देहात द्वारा उक्त कीट के नियंत्रण हेतु प्रक्षेत्र परीक्षण अंतर्गत कृषक पद्धति क्लोरोपाइरीफास या इंडोकसाकार्ब या मैलाथियान एक चम्मच दवा का तीन लिटर पानी में घोल बनाकर पांच दिनों के अन्तराल पर तीन छिड़काव के सापेक्ष किसान भाई छिड़काव कर दें जिससे फसल को कीड़ों से बचाया जा सकता है।

बैंगन फसल में कीट नियंत्रण हेतु वितरित की दवा

(अनवर अशरफ)। कानपुर चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ बिजेंद्र सिंह के निर्देश के क्रम में आज कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के प्रभारी डॉ अजय कुमार सिंह ने किसानों को बैंगन फसल में लगने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु दवा का वितरण किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि बैंगन की फसल को तना और फल छेदक कीट (Leucinodes orbonalis) सबसे अधिक नुकसान पहुंचाता है। इस कीट के प्रकोप से उपज ही कम नहीं होती ग्रसित फलों की गुणवत्ता कम होने से कृषकों को फसल का कम मूल्य मिलता है। किसी भी कीट के प्रभावी नियंत्रण के लिए आवश्यक है कि हम उस कीट की प्रकृति, स्वभाव, पहिचान, जीवन चक्र के बारे में जानकारी रखें, तभी कीट का प्रभावकारी नियंत्रण किया जा सकता है।

तना एवं फल छेदक कीट के वयस्क मध्यम आकार के मौथ ६ पतंगें जिनके अग्र पंख सफेद धब्बेदार होते हैं।

बैंगन फसल को इस कीट की इल्लियां ६ लार्वा नुकसान पहुंचाते हैं। फरवरी मार्च में कीट की वयस्क मादायें दूधिया रंग के अंडे एक एक करके या समूह में पत्तियों की निचली सतह, तनों, फूलों की कलियां या फल के आधार पर देती है। 3–5 दिनों बाद अंडों से लार्वा निकलने के बाद तने व शाखाओं के अग्र भाग में घुस जाती है जिस कारण तने ६ शाखाओं के अग्र भाग मुरझा कर लटक जाते है व बाद में सूख जाते है। पौधों पर फल आने पर लार्वा ६ इल्लियां फलों में छेद बना कर अंदर प्रवेश कर अन्दर घुसते ही कीट छेदों को अपने मल मूत्र से बन्द कर देते हैं।

इल्लियां अंदर ही अंदर फल के गूद्दे को खाती रहती हैं। कीट द्वारा किए गए छिद्रों से फफूंद व जीवाणु फलों के अन्दर प्रवेश करते हैं जिससे बाद में फल सड़ने लगते हैं।

पूरी तरह विकसित लार्वा सुदृढ़,गुलाबी रंग और भूरे सिर वाला होता है जो तनों,सूखी टहनियों या जमीन पर गिरी पत्तियों पर प्यूपा बनता है।

कीट की लार्वा अवस्था 12–15 दिनों की होती है। प्यूपा अवस्था 6–10 दिनों की होती है जिसके बाद वयस्क बनते हैं। वयस्क पतंगा 2–5 दिन जीवित रहता है। मौसम के अनुसार एक जीवन चक्र 21–43 दिनों में पूरा करता है। एक बर्ष के सक्रिय समय में इसकी पांच पीढिघ्यां तक हो सकती है। कृषि विज्ञान केंद्र कानपुर देहात द्वारा उक्त कीट के नियंत्रण हेतु प्रक्षेत्र परीक्षण अंतर्गत कृषक पद्धति क्लोरोपाइरीफास या इंडोकसाकार्ब या मैलाथियान एक चम्मच दवा का तीन लिटर पानी में घोल बनाकर पांच दिनों के अन्तराल पर तीन छिड़काव के सापेक्ष किसान भाई छिड़काव कर दें जिससे फसल को कीड़ों से बचाया जा सकता है।

बैंगन फसल में कीट नियंत्रण के बताये टिप्स

❑ किसानों को बांटी गई दवा, रोकथाम आवश्यक

किसानों को जानकारी देते वैज्ञानिक।

कानपुर, 17 अप्रैल। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ बिजेंद्र सिंह के निर्देश के क्रम में आज कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के प्रभारी डॉ अजय कुमार सिंह ने किसानों को बैंगन फसल में लगने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु दवा का वितरण किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि बैंगन की फसल को तना और फल छेदक कीट सबसे अधिक नुकसान पहुंचाता है। इस कीट के प्रकोप से उपज ही कम नहीं होती ग्रसित फलों की गुणवत्ता कम होने से कृषकों को फसल का कम मूल्य मिलता है। किसी भी कीट के प्रभावी नियंत्रण के लिए आवश्यक है कि हम उस कीट की प्रकृति, स्वभाव, पहिचान, जीवन चक्र के बारे में जानकारी रखें, तभी कीट का प्रभावकारी नियंत्रण किया जा सकता है। तना एवं फल छेदक कीट के वयस्क मध्यम आकार के मौथ/पतंगें जिनके अग्र पंख सफेद धब्बेदार होते हैं। बैंगन फसल को इस कीट की इल्लियां व लार्वा नुकसान पहुंचाते हैं। फरवरी मार्च में कीट की वयस्क मादायें दूधिया रंग के अंडे एक एक करके या समूह में पत्तियों की निचली सतह, तनों, फूलों की कलियां या फल के आधार पर देती है। 3-5 दिनों बाद अंडों से लार्वा निकलने के बाद तने व शाखाओं के अग्र भाग में घुस जाती है जिस कारण तने / शाखाओं के अग्र भाग मुरझा कर लटक जाते है व बाद में सूख जाते है। पौधों पर फल आने पर लार्वा /इल्लियां फलों में छेद बना कर अंदर प्रवेश कर अन्दर घुसते ही कीट छेदों को अपने मल मूत्र से बन्द कर देते हैं। इल्लियां अंदर ही अंदर फल के गूद्दे को खाती रहती हैं। कीट द्वारा किए गए छिद्रों से फफूंद व जीवाणु फलों के अन्दर प्रवेश करते हैं जिससे बाद में फल सड़ने लगते हैं। पूरी तरह विकसित लार्वा सुदृढ़,गुलाबी रंग और भूरे सिर वाला होता है जो तनों,सूखी टहनियों या जमीन पर गिरी पत्तियों पर प्यूपा बनता है।कीट की लार्वा अवस्था 12-15 दिनों की होती है। प्यूपा अवस्था 6-10 दिनों की होती है जिसके बाद वयस्क बनते हैं। वयस्क पतंगा 2-5 दिन जीवित रहता है। मौसम के अनुसार एक जीवन चक्र 21-43 दिनों में पूरा करता है। एक बर्ष के सक्रिय समय में इसकी पांच पीढ़ियां तक हो सकती है। कृषि विज्ञान केंद्र कानपुर देहात द्वारा उक्त कीट के नियंत्रण हेतु प्रक्षेत्र परीक्षण अंतर्गत कृषक पद्धति क्लोरोपाइरीफास या इंडोकसाकार्ब या मैलाथियान एक चम्मच दवा का तीन लिटर पानी में घोल बनाकर पांच दिनों के अन्तराल पर तीन छिड़काव के सापेक्ष किसान भाई छिड़काव कर दें जिससे फसल को कीड़ों से बचाया जा सकता है।

ई भी राष्ट्र तब बड़ा बनता है, जब उसके... 12

मुरादाबाद में महापौर के लिए 13 ने कराया नामांकन 10

जन एक्सप्रेस

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ
वर्षः 14 | अंकः 185
मूल्यः ₹3.00/-
पेज : 12
मंगलवार | 18 अप्रैल, 2023

कीट नियंत्रण के लिए किसानों को बांटी दवा

जन एक्सप्रेस, कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के प्रभारी डॉ.अजय कुमार सिंह द्वारा सोमवार को किसानों को बैंगन फसल में लगने वाले कीटों के नियंत्रण के लिए दवा का वितरण किया गया। डॉ.सिंह ने कहा कि बैंगन की फसल को तना और फल छेदक कीट सबसे अधिक नुकसान पहुंचाता है। जिसके प्रकोप से कम उपज होने के साथ ही ग्रसित फलों की गुणवत्ता कम होने से किसानों को फसल का मूल्य कम मिलता है। उन्होंने बताया कि ?किसी भी कीट के प्रभावी नियंत्रण के लिए उस कीट की प्रकृति, स्वभाव, पहिचान, जीवन चक्र के बारे में जानकारी रचना आवश्यक है जिससे कीट का प्रभावकारी नियंत्रण किया जा सके। उन्होंने बगैर फसल में लगने वाले कीट के बारे में जानकारी देने के साथ ही इसके उपचार के बारे में बताते हुए कहा किबताया कि कृषि विज्ञान केंद्र कानपुर देहात द्वारा इस कीट के नियंत्रण के लिए प्रक्षेत्र परीक्षण के अंतर्गत कृषक पद्धति क्लोरोपाइरीफास या इंडोकसाकार्ब या मैलाथियान एक चम्मच दवा का तीन लिटर पानी में घोल बनाकर पांच दिनों के अन्तराल पर किसान तीन छिड़काव करे। जिससे फसल को कीड़ों से बचाया जा सकता है।